

शोध सारांश

शोध विषय: विनयपिटक एवं कंखावितरणी में भिक्षुणी प्रातिमोक्ष का तुलनात्मक अध्ययन

भगवान बुद्ध ने भिक्षुणियों के सर्वांगीण उन्नति एवं विकास के लिए भिक्षुणी प्रातिमोक्ष का विधान किया था। भिक्षुणी प्रातिमोक्ष के सभी विनय सभी को ज्ञात एवं स्मरण रहे, इसलिए बुद्ध ने प्रातिमोक्ष को हर पंद्रह दिन एकत्रित हो दोहराने की अनुज्ञा दी थी। प्रातिमोक्ष के बारे में भगवान का यह मत था कि प्रातिमोक्ष का पालन करने से एवं रक्षण करने से व्यक्ति की अपायों से, दुखों से मुक्ति मिल जाती है। चूँकि प्रातिमोक्ष प्रत्येक की मुक्ति में प्रमुख है, इसलिए इसे प्रातिमोक्ष अर्थात् प्रातिमोक्ष कहा जाता है। यह पाप निक्षालन की एवं पाप भार से मुक्त होने अत्यंत सरल एवं सुगम विधि है, जिसमें प्रत्येक भिक्षु एवं भिक्षुणी संघ के समक्ष अपने पाप की कबुली देते हैं या संघ के किसी भी सदस्य को किसी के दुष्कर्म को देखा हो या सुना या संदेह हो तो वह संघ के समक्ष उसे रख देता है और दोषी उसे पुनः न दोहराने की प्रतिज्ञा लेकर संघ द्वारा विदित दंड को पूरा कर अपने स्वयं को परिशुद्धि के पथ पर भली प्रकार से प्रतिष्ठित करता है। भिक्षुणियों के उन्नति के लिए भगवान ने 311 विनय बताए हैं। यह विनय केवल नियम नहीं है, तो व्यक्ति के कायिक एवं वाचिक वर्तन को संयमित करने का सरल एवं सुगम मार्ग है। जिसमें भगवान ने उन दुष्कर्मों की सूची दी है, जिसके करने से व्यक्ति को दुखो एवं संकटों का सामना करना पड़ सकता है। इतने महत्वपूर्ण विनयों का अध्ययन करना एवं उसके उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए उसमें संशोधन करने की आवश्यकता मुझे प्रतीत हुई।

बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त प्रातिमोक्ष को विनयपिटक में केवल विधानमात्र के तौर पर दिया गया है। अर्थात् उन विनयों का विस्तारपूर्वक वर्णन विनयपिटक नहीं दिया गया है। इसके लिए विनयपिटक की अट्ठकथा कंखावितरणी का आधार लेना आवश्यक हो जाता है। राहुल सांकृत्यायन द्वारा अनुवादित एवं दि कॉर्पोरेट बॉडी ऑफ बुद्धा एज्यूकेशनल फ़ाउंडेशन, ताइवान द्वारा प्रकाशित विनयपिटक में भिक्षुणी प्रातिमोक्ष को केवल अठारह पृष्ठों में बताया गया है, आचार्य सत्यनारायण गोयनका द्वारा संपादित एवं विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा प्रकाशित कंखावितरणी में उसका विस्तार पैसठ पृष्ठों में दिया गया है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भिक्षुणी प्रातिमोक्ष का संपूर्ण अध्ययन करने के लिए कंखावितरणी का अध्ययन करना कितना आवश्यक है। लेकिन कंखावितरणी का हिंदी अनुवाद अभी तक नहीं किया गया है। इसलिए कंखावितरणी का हिंदी अनुवाद न होना यह मेरे शोध विषय की प्रमुख समस्या थी मुझे कंखावितरणी अनुवाद करते हुए और विनयपिटक एवं कंखावितरणी इन दोनों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए निम्नलिखित तथ्य दृष्टिगोचर हुए –

- 1) विनयपिटक में दिये गए विनयों की कंखावितरणी में अर्थसहित व्याख्या की गई है।
- 2) भिक्षुणियों को प्रज्ञप्त किए गए विनयों के प्रत्येक अंग एवं उपांगों को कंखावितरणी में बताया गया है।
- 3) कंखावितरणी विनयों का वर्णन करते हुए यह बताया गया है कि किसी विनय को भगवान कहाँ और किसके बारे में बताया है। इसका उल्लेख विनयपिटक में नहीं दिया गया है।

- 4) कंखावितरणी में यह भी बताया गया है कि कोई विनय किन परिस्थितियों में लागू नहीं होता। जैसे कि आपदा, रोगावस्था या पागलपन में किसी भिक्षुणी द्वारा किया गया विनयों का उल्लंघन आपत्ति नहीं माना जाता।
- 5) एक और बात कंखावितरणी के अध्ययन करने पर पता चलती है कि यदि कोई विनय किसी अनुपसम्पन्न (श्रामणेरी) द्वारा तोड़ा जाता है, तो उस पर भी दुक्कट नामक दोष लगता है। यह दोष छोटे दुष्कृत्य के श्रेणी में आता है।

इस प्रकार ऐसे कई बातें हैं, जो केवल कंखावितरणी में ही मिलती हैं, अन्य किसी भी ग्रंथ में इसके बारे में जानकारी नहीं मिलती।

विनयपिटक एवं कंखावितरणी इन दोनों ग्रंथों में स्त्रियों के विभिन्न मानसिक अवस्थाओं का वर्णन मिलता है। दोनों में अन्तर सिर्फ इतना है कि कंखावितरणी में इसका वर्णन विस्तारपूर्वक दिया गया है। लोभ, द्वेष, ईर्ष्या, मत्सर आदि लोकधर्मों से भिक्षुणियाँ प्रारम्भिक अवस्था में ग्रसित रहती थीं। इसके चलते हुए वे झूठ बोलना, निंदा, चुगली करना, जानबूझकर अन्य भिक्षुणी को हैरान करना, पात्र, चीवर आदि का संचय करना आदि दुष्कर्म करती थीं। यह सब क्रियाएँ उनके प्रदूषित मानसिकता दर्शन कराती हैं। आज भी महिलाओं में यह लोकधर्म विद्यमान है, जिनके चलते हुए उन्हें नाना दुखों का सामना करना पड़ता है। भिक्षुणियों को इसी प्रदूषित मानसिकता दूर निकालने के लिए भगवान ने इन विनयों का विधान किया। इन विनयों का पालन करते हुए कई भिक्षुणियाँ इस प्रदूषित मानसिक अवस्था से निकलकर उच्चतम मानसिक अवस्था में जिसे बुद्ध निर्वाण कहते हैं, में पहुँच गईं। पटाचारा जैसे विक्षिप्त स्त्री जो सिद्धोफ्रेनिया की रोगी थी, वह भिक्षुणी प्रातिमोक्ष का पालन करते हुए निर्वाण की उच्चतम मानसिक अवस्था में पहुँच गईं। उसकी अग्र विनयधारिणी का दर्जा देकर बुद्ध ने प्रशंसा की थी। पटाचारा जैसे कई भिक्षुणियों के ऊपर भिक्षुणी प्रातिमोक्ष का सकारात्मक प्रभाव पड़ा था। लोभ द्वेष आदि कुंठित मानसिकता में जो पहले जीवन जिया करती थीं वे भिक्षुणी प्रातिमोक्ष का पालन एवं रक्षण करते हुए मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा आदि कुशल भावना में विहार करने लगीं। उनका जीवन पहले केवल एक परिवार तक सीमित मानसिकता में रहता था, बुद्ध की शिक्षा एवं विनय पाकर वे व्यापक मानसिकता वाली हो गईं। वे भी समाज में सम्मानित एवं पूजित होने लगीं। इसप्रकार बुद्धकालीन समाज में भिक्षुणी प्रातिमोक्ष का भिक्षुणियों पर काफी सकारात्मक प्रभाव हुआ।

वर्तमान में बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त भिक्षुणी प्रातिमोक्ष की प्रासंगिकता अधिक है। वर्तमान में स्त्रियों के विकास एवं उत्थान के लिए पोषक वातावरण है। उनकी मानसिकता को सकारात्मक एवं विकासोन्मुख बनाने के लिए बुद्ध के इन शिक्षापदों का समझना उनके लिए अधिक महत्व रखता है। बुद्धकालीन समाज में भिक्षुणियों को अपने विकास में स्त्रीत्व आड़े नहीं आया, वर्तमान में भी अपने विकास के लिए निर्भिड मानसिकता की आवश्यकता है। भिक्षुणी प्रातिमोक्ष स्त्रियों के लिए आज भी प्रेरक सिद्ध हो सकता है।

Research summary

Topic of dissertation: Comparative Study of Bhikshuni Pratimoksh in Vinayapitaka and Kankhavitarni

Bhagwan Buddha proposed Bhikshuni Pratimoksha (rules of discipline) for the all round development and enhancement of the women. In order to know this discipline and for its permanent remembrance, Buddha made these rules for all sangha to gather together after every fifteenth day and recall and memorize these rules of discipline for the purification of sangha. About Pratimoksha Buddha holds the views that those who observe and protect them, would be freed from all sufferings and injuries. Because pratimoksha is chiefly important in one's enlightenment. It is a very easy method to filtrate and lighten the sin. In this method, every monk or nun confesses himself or herself before the sangha or any monk who see, hear or has doubt on somebody else who does wrong, tells before sangha and with composite and cooperative effort ,he becomes associate and collectively responsible for the purification of each other. In this, every victim gives his assurance not to do wrong again and makes himself or herself well-established in dhamma. Buddha made 311 rules of discipline for the enhancement of nuns. These vinayas are not only mere rules but also a way to control body and verbal wrongs that lead to suffering. I feel the need to do research on this very important topic.

In Vinayapitaka, these rules of discipline come only in statement form. It doesnot have its detail explanation. For the detail study of vinayas its corollary must be taken into consideration. Kankhavitarni is a corollary of the Vinayapitaka. But the problem is that the translation of Kankhavitarni has not been done yet. This major problem is dealt in my research. Vinaypitaka, translated by Rahul sankrutayan and published by the corporate body of the Buddha's educational foundation, describes these vinayas only in 18 pages and in kankhavitarni, edited by Acharya Satyanarayan Goenka and published by Vipashyana Vishodhan Vinyas, Igatpuri, explains this all in only 65 pages. On this basis we can say that how Kankhavitarni is important to study bhikshuni pratimoksha on the whole. So I tried to translate it. When I did the comperative study of both these books, I found some following facts as-

- 1) Kankhavitarani gives the meanings of all the vinayas told by Buddha to bhikshni.
- 2) It tells about all parts and sub parts of each vinayas.
- 3) It also tells where and to whom Buddha proposed this.
- 4) It also tells in which condition these vinayas are not applicable in disaster, disease, lunatic condition, etc.
- 5) From kankhavitarani, we come to know one thing that those who havenot higher ordination in sangha, they also come into bhikshuni pratimoksha, but after disobeydance of the vinayas, they get little punishment and not so hard punishment like bhikshunis get.

Both these books give the information about different mental level of the nuns. The difference is that kankhavitarani gives the detail explanation of it. In primary level these nuns were affected by lust, hatred, jelous, etc. This affected their polluted mental condition who did number of wrong deeds like speaking lie, to mock, to insult, to collect pot and clothes etc. Today also women are affected by this polluted mental condition. In order to get out of this mental condition, Buddha proposed this vinaya. By following these vinayas so many nuns at buddhas period got enlightenment. Patachara is the best example of that. She was the Psychophrenic patient. She was completely cured by observing bhikshuni vinayaas. Those bhikshunis who were in primary stage were living in polluted mental condition and did number of wrong deeds. Now by observing Buddha vinaya, they started to practice loving kindness, compassion etc. Now they worked for the good and betterment of their ownself and society. They became more respected and venerable for society.

Today also these rules of discipline are more applicable. Nowadays it is more suitable and healthy time for the upliftment of the women. In such a time positive and healthy teaching that keeps one stable and well-concentrated on their goal. Their womanhood can not be made hurdle of their enhancement and enlightenment. Buddha's teaching of rules of discipline makes them more strong and independent as they were never before.